क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर.ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइट: kriyayoga-yogisatyam.org
क्रम संख्या .....

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है
दिनाँक :

क्रियायोग साधना से अन्त:करण में शास्त्रों की अनुभूति

अविद्या समस्त कष्टों का मूल कारण – स्वामी श्री योगी सत्यम्

24 फरवरी, 2013 इलाहाबाद । महाकुम्भ क्षेत्र में मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर में अन्तर्राष्ट्रीय क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने स्पष्ट किया कि मनुष्य की सम्पूर्ण समस्याओं का कारण अविद्या है। अविद्या को अज्ञान (Ignorance) कहा गया है। मनुष्य अविद्या की अनुभूति द्रव्यमान, भार, आयतन, अपने स्वरूप के निश्चित आकार-प्रकार, लम्बाई, वजन की सीमित अनुभूति, अपने अंदर सीमित शक्ति व सीमित ज्ञान की अनुभूति आदि के रूप में करता है। स्वयं को धर्म, सम्प्रदाय, देश, जाति व काल की सीमा में बाँधने वाला व्यक्ति अविद्या के पाश में बँधा रहता है। अविद्या को वैज्ञानिक भाषा में परमाणु कहा गया है। परमाणु शक्ति का घनीभूत रूप है। शक्ति का कोई निश्चित आकार, रूप-रंग और सीमा नही होती है। शक्ति का स्वरूप अनन्त व असीम होता है इसलिए परमाणु का वास्तविक स्वरूप भी अनन्त व असीम है। परमाणु को निश्चित आकार, भार, द्रव्यमान, आयतन, वजन आदि के रूप में अनुभव करना, अविद्या की अनुभूति है। ब्रह्माण्ड की समस्त रचनाओं का निर्माण अणु-परमाणुओं से हुआ है। अतः ब्रह्माण्ड की प्रत्येक रचना का कोई निश्चित रूप-रंग, आकार-प्रकार, लम्बाई-चौड़ाई व वजन नही है। प्रत्येक रचनाएँ मूलतः असीम शक्ति का स्वरूप हैं। शक्ति का विनाश नहीं होता है, उसका स्वरूप अमर है, इसलिए ब्रह्माण्ड की प्रत्येक रचनाएँ मूलतः अमर हैं। मानव का स्वरूप भी अणु-परमाणुओं का महाकुंभ है। मनुष्य जब अपने स्वरूप को परमशक्ति के रूप में अनुभव न करके सीमित हाड़-माँस के रूप में अनुभव करता है, तब वह पूर्णतया अविद्या के प्रभाव में होता है। ऐसी अवस्था में वह बीमारी, तनाव, चिन्ता, डर की अवस्था में रहता हुआ कूप मंडूक की तरह जीवन व्यतीत करता है।

क्रियायोग का विश्वव्यापी प्रसार एक ऐसे अखण्डित विश्व का सूत्रपात करेगा जिसके शासक स्वयं परमचैतन्य परमात्मा होंगे । - गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने अविद्या पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हुए कहा कि अविद्या को समझने के लिए महाभारत को समझना आवश्यक है। महाभारत तथा किसी भी ग्रन्थ को समझने के लिए यह मानना आवश्यक है कि परमात्मा स्वयं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, दृश्य व अदृश्य जगत सबके रूप में प्रकट हो रहे हैं तथा परमात्मा के अंदर भूत, भविष्य और वर्तमान है। परमात्मा हमारे स्वरूप के रूप में भी प्रकट हो रहे हैं इसलिए हमारे अंदर भी आदि, मध्य और अन्त विद्यमान है। क्रियायोग साधना के द्वारा अपने स्वरूप में मन को केन्द्रित करने पर अतीत का दृश्य प्रकट होता है। ऐसी अवस्था में यह स्पष्ट हो जाता है कि महाभारत के समस्त पात्र तथा घटनाएँ अपने अंदर की भिन्न-भिन्न शक्तियों के रुप में प्रकाशित हैं। उन्होंने आगे कहा कि महाभारत काल के कृपाचार्य अपने अंदर अविद्या के प्रतीक है।

''कृपाचार्य'' की तात्विक व्याख्या पर प्रकाश डालते हुए स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने स्पष्ट किया कि कृपाचार्य शब्द कृप् , अ तथा आचार्य के संयोग से बना है। 'कृप' का अर्थ कल्पना तथा 'अ' का अर्थ उल्टा (विपरीत) से है। 'आचार्य' का अर्थ शिक्षक है। उल्टी कल्पना के आचार्य कृपाचार्य हैं। अपने अंदर विद्यमान इसी शक्ति को मृग मरीचिका की शक्ति कहते हैं और इसी शक्ति को अविद्या के नाम से जानते हैं । यहाँ उल्टी कल्पना का अर्थ सत्य को असत्य तथा असत्य को सत्य के रूप में अनुभव करने से है। कृपाचार्य महाभारत में भाग नही लिए थे। अतः अविद्या के प्रभाव को निष्क्रय करने के लिए साधक को महाभारत का अभ्यास करना पड़ता है। स्वामी जी ने आगे स्पष्ट किया कि महाभारत का अर्थ लड़ाई, मार-पीट नही है। महाभारत अमरता से जुड़ने का विज्ञान है। 'महाभारत' शब्द महा, भा और रत के संयोग से बना है जिसमें महा का अर्थ सबसे बड़ा, भा का अर्थ ज्ञान तथा रत का अर्थ युक्त होने से है। सबसे बड़े ज्ञान से युक्त होना महाभारत की स्थिति है। सबसे बड़ा ज्ञान अमरता का ज्ञान है। अतः अमरता के ज्ञान से युक्त होना महाभारत में स्थित होना है। स्वामी जी ने आगे कहा कि क्रियायोग के अभ्यास से साधक अपने को अमर, सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञ स्वरूप के रूप में अनुभव कर लेता है। अतः क्रियायोग की साधना ही महाभारत का अभ्यास है जिससे अविद्या का लोप हो जाता है तथा अन्तःकरण में विद्या का ज्ञान प्रकाशित हो जाता है। स्वामी जी ने उपस्थित साधकों को आहार विज्ञान तथा अन्य महत्वपूर्ण तथ्यों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए क्रियायोग का विधिवत् अभ्यास कराया।

क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:00 बजे से 10:00 बजे तक तथा दोपहर 3:30 बजे से सायं 6:30 बजे तक और रात्रि 11:00 बजे से 1:00 बजे तक हिन्दी तथा अँग्रजी भाषा में बड़े ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है । कार्यक्रम में भारत, कनॉडा, अमरीका, पोलैण्ड, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, फिनीलैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि देशों से आये हुए चिकित्सक, इंजीनियर, प्रोफेसर, साधक, प्रबुद्ध वर्ग तथा तीर्थयात्री और कल्पवासी भारी संख्या में भाग ले रहे हैं ।

– योगमाता